International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

# प्रेमचंद के 'गोदान' में वर्ग-संघर्ष और कृषक-शोषण:सामंती व्यवस्था तथा उभरती पूँजीवादी शक्तियों का मार्क्सवादी अध्ययन।

**भूपेंद्र कुमार चौधरी**
विभाग हिंदी, डॉ भंवर सिंह पोर्ते शासकीय महाविद्यालय पेंड्रा।

**सार**
प्रेमचंद का 'गोदान' हिंदी उपन्यास परंपरा में भारतीय ग्रामीण जीवन, कृषक-अस्तित्व और सामाजिक-आर्थिक विषमता का महत्त्वपूर्ण यथार्थवादी आख्यान है। प्रस्तुत शोधपत्र में उपन्यास का मार्क्सवादी दृष्टिकोण से अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि कृषक-शोषण केवल किसी एक जमींदार या महाजन की व्यक्तिगत क्रूरता का परिणाम नहीं, भूमि-संबंधों, ऋण-व्यवस्था, जातिगत पदानुक्रम, धार्मिक-सांस्कृतिक मान्यताओं और औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था से निर्मित व्यापक संरचना का परिणाम है। होरी का जीवन उस किसान की त्रासदी को सामने लाता है जो उत्पादन करता है, किंतु अपने श्रम के फल पर उसका नियंत्रण सीमित रहता है। दूसरी ओर, नगर-केंद्रित पात्रों और संस्थाओं के माध्यम से उपन्यास आधुनिक मध्यवर्ग, पूँजी, प्रतिष्ठा तथा उपभोग की आकांक्षाओं के अंतर्विरोध भी उजागर करता है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि 'गोदान' में सामंती संबंध और उभरती पूँजीवादी शक्तियाँ सरल ऐतिहासिक प्रतिस्थापन के रूप में नहीं, परस्पर जुड़ी हुई शोषणकारी संरचनाओं के रूप में उपस्थित हैं।
**मुख्य शब्द:** प्रेमचंद, गोदान, मार्क्सवादी आलोचना, वर्ग-संघर्ष, कृषक-शोषण, सामंती व्यवस्था, पूँजीवाद, ग्रामीण समाज, आर्थिक विषमता।

## 1. प्रस्तावना

हिंदी उपन्यास के विकास में प्रेमचंद का योगदान इस कारण विशिष्ट है कि उन्होंने साहित्य को सामाजिक जीवन की वास्तविक समस्याओं से गहरे रूप में जोड़ा। उनके साहित्य में किसान, मजदूर, स्त्री, दलित और आर्थिक रूप से वंचित समुदाय केवल कथानक के सहायक पात्र नहीं, सामाजिक संरचना की असमानताओं को उद्घाटित करने वाले केंद्रीय अनुभव बनकर उभरते हैं। 'गोदान' (1936) इस रचनात्मक दृष्टि का परिपक्व उदाहरण है। उपन्यास का केंद्र होरी महतो है—एक ऐसा कृषक जिसकी आकांक्षाएँ साधारण हैं: परिवार का निर्वाह, सामाजिक प्रतिष्ठा, पशुधन की प्राप्ति और धार्मिक-सांस्कृतिक मर्यादाओं के भीतर सम्मानजनक जीवन। फिर भी उसके श्रम और इच्छाओं के बीच लगातार ऋण, दंड, सामाजिक दबाव और आर्थिक निर्भरता की दीवार खड़ी होती जाती है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962)
मार्क्सवादी साहित्यालोचना साहित्यिक रचना को उसके ऐतिहासिक, आर्थिक और वर्गीय संदर्भों में पढ़ती है। इस दृष्टि में उत्पादन-संबंध, संपत्ति का स्वामित्व, श्रम का नियंत्रण, अधिशेष का अधिग्रहण तथा

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

विचारधारात्मक संस्थाएँ महत्त्वपूर्ण विश्लेषणात्मक श्रेणियाँ हैं। 'गोदान' को इस दृष्टिकोण से पढ़ने पर स्पष्ट होता है कि ग्रामीण जीवन की कठिनाइयाँ केवल व्यक्तिगत दुर्भाग्य या नैतिक कमजोरी से नहीं समझी जा सकतीं। किसान की निर्धनता उस सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था से जुड़ी है जिसमें भूमि और संसाधनों पर नियंत्रण असमान है, ऋणदाता तथा स्थानीय प्रभुत्वशाली वर्ग निर्णयकारी शक्ति रखते हैं और किसान अपने श्रम के बावजूद आर्थिक सुरक्षा हासिल नहीं कर पाता। (मार्क्स, 1867; मार्क्स एवं एंगेल्स, 1846; विलियम्स, 1977; ईगलटन, 1976)

इस अध्ययन का उद्देश्य उपन्यास को किसी एक सिद्धांत में सीमित करना नहीं, मार्क्सवादी अवधारणाओं की सहायता से उसकी वर्गीय संरचना, शोषण के तंत्र और सामाजिक चेतना के अंतर्विरोधों का विश्लेषण करना है। साथ ही यह भी देखा गया है कि सामंती अवशेषों के साथ उभरती पूँजीवादी मानसिकता किस प्रकार ग्रामीण और नगरीय जीवन को जोड़ती है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962)

## 2.साहित्य समीक्षा

प्रेमचंद के 'गोदान' में वर्ग-संघर्ष और कृषक-शोषण का मार्क्सवादी अध्ययन करते समय पूर्ववर्ती साहित्य को तीन परस्पर संबद्ध क्षेत्रों में समझना उपयोगी है—प्रेमचंद के जीवन और युग का अध्ययन, 'गोदान' की कथात्मक-सामाजिक व्याख्या, तथा मार्क्सवादी सिद्धांत और साहित्यालोचना। उपलब्ध संदर्भ-सूची इन तीनों क्षेत्रों के स्रोत प्रस्तुत करती है। तथापि, केवल संदर्भ-सूची के आधार पर प्रत्येक पुस्तक के विशिष्ट निष्कर्ष या तर्क को निश्चित रूप से उद्धृत नहीं किया जा सकता; इसलिए निम्न समीक्षा स्रोतों के ज्ञात विषय-क्षेत्र और इस शोधपत्र के प्रश्नों के आधार पर संयमित रूप में प्रस्तुत की गई है।

### 1. प्रेमचंद, उनका युग और सामाजिक यथार्थ

प्रेमचंद का 'गोदान' (1936) इस अध्ययन का प्राथमिक साहित्यिक स्रोत है। उपन्यास के ग्रामीण संसार में किसान का श्रम, ऋण, सामाजिक प्रतिष्ठा, जातिगत मर्यादाएँ और पारिवारिक दायित्व परस्पर जुड़े हुए दिखाई देते हैं। होरी का जीवन इस प्रश्न को केंद्र में लाता है कि उत्पादन करने वाला किसान अपने श्रम के बावजूद आर्थिक सुरक्षा और निर्णय-स्वायत्तता क्यों प्राप्त नहीं कर पाता (प्रेमचंद, 1936)। इस शोध में उपन्यास के प्रसंगों को ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भ में पढ़ना आवश्यक है।

रामविलास शर्मा की 'प्रेमचंद और उनका युग' (1952) तथा अमृत राय की 'कलम का सिपाही' (1962) शीर्षकों और विषयगत प्रकृति के आधार पर प्रेमचंद के साहित्य को उनके जीवन, समय और सामाजिक परिवेश से जोड़कर समझने के लिए प्रासंगिक स्रोत हैं। इन ग्रंथों को आधार बनाकर प्रेमचंद की रचनात्मक दृष्टि और उनके युग की सामाजिक परिस्थितियों के संबंध पर चर्चा की जा सकती है; हालांकि किसी विशिष्ट मत या निष्कर्ष को उद्धृत करने से पहले मूल संस्करण का सत्यापन अपेक्षित है (शर्मा, 1952; राय, 1962)।

शिवरानी देवी की 'प्रेमचंद घर में' (1944) प्रेमचंद के निजी जीवन और पारिवारिक परिवेश के अध्ययन के लिए संदर्भ-सूची में शामिल है। यह स्रोत लेखक की जीवन-स्थितियों को समझने में सहायक हो सकता है,

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

लेकिन 'गोदान' की वर्गीय संरचना के बारे में प्रत्यक्ष निष्कर्ष निकालने के लिए उपन्यास-पाठ और आलोचनात्मक अध्ययनों की अलग से आवश्यकता रहती है (देवी, 1944)।

**2. 'गोदान' की आलोचनात्मक व्याख्या**

'गोदान' पर केंद्रित आलोचनात्मक ग्रंथ इस शोध के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं। गोपाल राय की 'गोदान: नया परिप्रेक्ष्य' (1985), पद्मा श्रीवास्तव के संपादन में प्रकाशित 'गोदान: एक पुनर्विचार' (1982), तथा मीना मुखर्जी की 'गोदान: कल्पना और यथार्थ' (1980) संदर्भ-सूची में ऐसे अध्ययनों के रूप में दर्ज हैं जिनके शीर्षक उपन्यास की पुनर्व्याख्या, यथार्थ-चित्रण और आलोचनात्मक दृष्टियों की ओर संकेत करते हैं। इन स्रोतों का तुलनात्मक अध्ययन यह पहचानने में मदद कर सकता है कि 'गोदान' को केवल किसान-जीवन के चित्रण के रूप में नहीं, सामाजिक संबंधों और आर्थिक असमानताओं के आख्यान के रूप में कैसे पढ़ा गया है (राय, 1985; श्रीवास्तव, 1982; मुखर्जी, 1980)।

जयकुमार का 'प्रेमचंद का गोदान यदि मैं लिखता' शीर्षक लेख, जो संदर्भ-सूची के अनुसार 'गोदान: एक पुनर्विचार' में संकलित है, रचनात्मक पुनर्पाठ या वैकल्पिक आलोचनात्मक दृष्टि की संभावना प्रस्तुत करता है। इस शोध में ऐसे पुनर्पाठों को मूल उपन्यास के पाठ से मिलाकर देखना उपयोगी होगा, ताकि आलोचक की व्याख्या और उपन्यास में प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित घटनाओं के बीच अंतर स्पष्ट बना रहे (कुमार, 1973)।

नंदकिशोर वाजपेयी की 'प्रेमचंद: एक साहित्यिक विवेचन' (1953), नामवर सिंह की 'इतिहास और आलोचना' (1962), तथा शुक्ल की 'हिंदी साहित्य का इतिहास' (1929) हिंदी साहित्यिक आलोचना और इतिहास-लेखन के व्यापक संदर्भ प्रदान कर सकते हैं। इनका उपयोग प्रेमचंद के साहित्यिक स्थान और यथार्थवादी परंपरा की पृष्ठभूमि स्पष्ट करने के लिए किया जा सकता है; 'गोदान' के वर्ग-संघर्ष पर इनके विशिष्ट मतों को शामिल करने से पहले संबंधित अध्यायों और पृष्ठों की जाँच आवश्यक है (वाजपेयी, 1953; सिंह, 1962; शुक्ल, 1929)।

शिवप्रकाश मिश्रा की 'गोदान, हमारा समय और हम' (2005), सत्यकाम का 'हिंदी आलोचना में गोदान का मूल्यांकन' (2018), कौशिक का 'गोदान: सामाजिक समस्याओं का दर्पण' (2022), तथा पटेल का 'आलोचक की दृष्टि से गोदान का मूल्यांकन' (2025) संदर्भ-सूची में अपेक्षाकृत बाद के अध्ययन हैं। विषयगत रूप से ये समकालीन सामाजिक प्रश्नों और आलोचनात्मक मूल्यांकन से जुड़ते प्रतीत होते हैं। वर्तमान शोध में इन स्रोतों की सहायता से यह जाँचा जा सकता है कि 'गोदान' की सामाजिक प्रासंगिकता, किसान-संकट और असमानता के प्रश्नों की व्याख्या किस प्रकार विकसित हुई है। इन लेखों के प्रकाशन-विवरण, पूर्ण पाठ और निष्कर्षों की स्वतंत्र पुष्टि किए बिना उनके निष्कर्षों को निश्चित तथ्य के रूप में प्रस्तुत नहीं करना चाहिए (मिश्रा, 2005; सत्यकाम, 2018; कौशिक, 2022; पटेल, 2025)।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

### 3. मार्क्सवादी सिद्धांत और साहित्यालोचना

कार्ल मार्क्स की 'पूँजी' (1867) उत्पादन-संबंधों, श्रम, संपत्ति और पूँजी के संचय का सैद्धांतिक आधार उपलब्ध कराती है। 'गोदान' के संदर्भ में इन अवधारणाओं का उपयोग किसान के श्रम और उसके प्रतिफल के बीच की दूरी, ऋण-निर्भरता तथा संसाधनों पर असमान नियंत्रण का विश्लेषण करने के लिए किया जा सकता है। यह सैद्धांतिक प्रयोग उपन्यास को आर्थिक सिद्धांत का मात्र उदाहरण बनाने के बजाय उसके विशिष्ट पात्रों और प्रसंगों की व्याख्या के साथ जोड़ा जाना चाहिए (मार्क्स, 1867)।

मार्क्स और एंगेल्स की 'जर्मन विचारधारा' (1846) तथा एंगेल्स की 'परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति' (1884) समाज, विचारधारा, संपत्ति और सामाजिक संस्थाओं के संबंधों पर विचार करने के लिए संदर्भ-सूची में शामिल हैं। इस अध्ययन में इन ग्रंथों से संबंधित अवधारणाएँ यह पूछने में सहायक हो सकती हैं कि सामाजिक मान्यताएँ और संस्थागत संबंध आर्थिक असमानता को किस प्रकार बनाए रखते हैं। फिर भी, इन सिद्धांतों को उपन्यास पर लागू करते समय ऐतिहासिक संदर्भ और पाठगत प्रमाणों को प्राथमिकता देनी चाहिए (मार्क्स एवं एंगेल्स, 1846; एंगेल्स, 1884)।

रेमंड विलियम्स की 'मार्क्सवाद और साहित्य' (1977) तथा टेरी ईगलटन की 'मार्क्सवादी साहित्यिक आलोचना' (1976) साहित्य, विचारधारा और सामाजिक संरचना के पारस्परिक संबंधों पर सैद्धांतिक चर्चा के लिए उपयोगी संदर्भ हैं। इनके आधार पर 'गोदान' में वर्ग-संबंधों के साथ सांस्कृतिक मान्यताओं, प्रतिष्ठा, धर्म और सामाजिक चेतना की भूमिका का अध्ययन किया जा सकता है। इस दृष्टि से होरी के निर्णयों को केवल व्यक्तिगत कमजोरी मानने के बजाय उन सामाजिक परिस्थितियों के भीतर समझना आवश्यक है जो उसके विकल्पों को सीमित करती हैं (विलियम्स, 1977; ईगलटन, 1976)।

### 4. साहित्य समीक्षा से उभरता शोध-अंतराल

उपलब्ध संदर्भ-सूची में प्रेमचंद के जीवन और युग, 'गोदान' की आलोचनात्मक व्याख्या, हिंदी साहित्येतिहास तथा मार्क्सवादी सिद्धांत—इन सभी के स्रोत शामिल हैं। इस आधार पर वर्तमान शोध का केंद्र इन क्षेत्रों को एक साथ जोड़ना है: होरी का श्रम और ऋणग्रस्तता; जमींदारी तथा महाजनी प्रभुत्व; जाति और धार्मिक-सामाजिक मान्यताएँ; स्त्री-श्रम; और ग्रामीण तथा नगरीय संसार में उभरती पूँजीवादी आकांक्षाएँ।

प्रस्तुत अध्ययन का संभावित योगदान यह है कि वह कृषक-शोषण को किसी एक शोषक पात्र की व्यक्तिगत क्रूरता तक सीमित न रखकर आर्थिक, सामाजिक और वैचारिक संबंधों की संयुक्त संरचना के रूप में पढ़ता है। साथ ही, वर्गीय विश्लेषण में धनिया के श्रम और प्रतिरोध तथा परंपरा की दोहरी भूमिका को शामिल करके उपन्यास की जटिलता को बनाए रखा जाता है। यह शोध-अंतराल संदर्भ-सूची के शीर्षकों और वर्तमान शोध-प्रश्नों से निकला हुआ एक विश्लेषणात्मक प्रस्ताव है; इसे अंतिम रूप देने के लिए उद्धृत आलोचनात्मक पुस्तकों और लेखों के मूल पाठ का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

### 3. अध्ययन के उद्देश्य

1. 'गोदान' में वर्ग-संबंधों और ग्रामीण आर्थिक संरचना का मार्क्सवादी विश्लेषण करना।
2. होरी तथा अन्य कृषक पात्रों के माध्यम से ऋण, श्रम और उत्पादन-संबंधों में निहित शोषण को समझना।
3. जमींदारी, महाजनी व्यवस्था, जाति और धार्मिक-सामाजिक मान्यताओं की परस्पर भूमिका का परीक्षण करना।
4. उपन्यास के ग्रामीण और नगरीय संसार में सामंती मूल्यों तथा उभरती पूँजीवादी शक्तियों के अंतर्विरोधों की पहचान करना।
5. यह मूल्यांकित करना कि उपन्यास में वर्ग-चेतना, प्रतिरोध और सामाजिक परिवर्तन की संभावनाएँ किस रूप में व्यक्त होती हैं।

### 4. शोध-पद्धति एवं सैद्धांतिक आधार

यह अध्ययन गुणात्मक, पाठ-केंद्रित और व्याख्यात्मक प्रकृति का है। इसमें 'गोदान' के कथानक, पात्रों, संवादों, सामाजिक संबंधों और प्रतीकात्मक प्रसंगों का निकट-पाठ किया गया है। विश्लेषण के लिए मार्क्सवादी आलोचना की प्रमुख अवधारणाओं—वर्ग-संबंध, उत्पादन-संबंध, श्रम और संपत्ति का विभाजन, अधिशेष का अधिग्रहण, विचारधारा तथा सामाजिक पुनरुत्पादन—को आधार बनाया गया है। (मार्क्स, 1867; मार्क्स एवं एंगेल्स, 1846; विलियम्स, 1977; ईगलटन, 1976)

मार्क्सवादी दृष्टि में वर्ग का निर्धारण केवल आय या सामाजिक प्रतिष्ठा से नहीं होता; यह भी देखा जाता है कि उत्पादन के साधनों पर किसका नियंत्रण है और श्रम के परिणामों पर किसका अधिकार है। 'गोदान' में कृषक परिवार भूमि से जुड़ा है, किंतु भूमि, पशुधन, बीज, कर, लगान और ऋण के दबावों के कारण उसकी वास्तविक आर्थिक स्वतंत्रता सीमित रहती है। इस कारण किसान उत्पादन-प्रक्रिया में केंद्रीय होते हुए भी संसाधनों के वितरण और निर्णय की शक्ति से वंचित है। (मार्क्स, 1867; मार्क्स एवं एंगेल्स, 1846; विलियम्स, 1977; ईगलटन, 1976)

अध्ययन में ऐतिहासिक संदर्भ को भी महत्त्व दिया गया है। उपन्यास औपनिवेशिक भारत के उस ग्रामीण समाज को प्रस्तुत करता है जहाँ पारंपरिक भूमि-संबंध, महाजनी ऋण, जातिगत पदानुक्रम और बाजार-आधारित दबाव साथ-साथ सक्रिय हैं। अतः यहाँ सामंतवाद और पूँजीवाद को पूर्णतः पृथक चरणों की तरह नहीं, ऐसे संबंधों के रूप में समझना अधिक उपयोगी है जो एक-दूसरे के साथ अंतःक्रिया करते हैं। (मार्क्स, 1867; मार्क्स एवं एंगेल्स, 1846; विलियम्स, 1977; ईगलटन, 1976)

### 5. ग्रामीण समाज और वर्गीय संरचना

'गोदान' का ग्रामीण संसार अनेक स्तरों में विभाजित है। एक ओर होरी जैसे छोटे कृषक हैं, जिनकी आजीविका भूमि और पारिवारिक श्रम पर निर्भर है; दूसरी ओर जमींदार, महाजन, प्रभावशाली ग्रामीण और प्रशासनिक-सामाजिक सत्ता से जुड़े लोग हैं, जिनके पास संसाधनों तथा निर्णयों को प्रभावित करने की

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

क्षमता अधिक है। इनके बीच का संबंध केवल आर्थिक लेन-देन नहीं, प्रतिष्ठा, भय, परंपरा और सामाजिक मान्यता से भी संचालित होता है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962)

होरी का किसान होना उसे सामाजिक सम्मान की आकांक्षा देता है, लेकिन उसकी सीमित आर्थिक स्थिति उसे लगातार दूसरों पर निर्भर रखती है। वह अपने श्रम से उत्पादन करता है, पर लगान, कर्ज, पारिवारिक आवश्यकताओं और सामाजिक दायित्वों के कारण बचत नहीं कर पाता। इस स्थिति में श्रम आर्थिक मुक्ति का साधन बनने के बजाय जीवित रहने की अनिवार्य शर्त बन जाता है। यही वर्गीय असमानता का मूल विरोधाभास है: उत्पादन करने वाला व्यक्ति उत्पादन के लाभ पर पर्याप्त नियंत्रण नहीं रखता। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962)

ग्रामीण समाज में वर्ग-संबंध जाति और लिंग से भी प्रभावित होते हैं। जातिगत प्रतिष्ठा कुछ पात्रों को सामाजिक अधिकार प्रदान करती है, जबकि निम्न स्थिति वाले समुदायों पर दंड और बहिष्कार का खतरा अधिक रहता है। स्त्रियों का श्रम परिवार और खेत दोनों में महत्त्वपूर्ण है, फिर भी उनकी भूमिका को अक्सर पारिवारिक कर्तव्य के रूप में देखा जाता है, न कि स्वतंत्र आर्थिक योगदान के रूप में। इस प्रकार उपन्यास वर्गीय शोषण को सामाजिक पदानुक्रम से अलग करके नहीं दिखाता। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962)

**6. होरी का जीवन: श्रम, ऋण और शोषण**

होरी उपन्यास का केंद्रीय कृषक पात्र है और उसकी जीवन-यात्रा आर्थिक असुरक्षा की क्रमिक गहराई को व्यक्त करती है। गाय प्राप्त करने की उसकी इच्छा केवल पशुधन की चाह नहीं है; वह ग्रामीण प्रतिष्ठा, धार्मिक-सांस्कृतिक आकांक्षा और बेहतर घरेलू जीवन की उम्मीद से जुड़ी है। किंतु गाय से संबंधित घटनाएँ उसके लिए आर्थिक स्थिरता का मार्ग नहीं बनतीं। इसके विपरीत, वे उसे ऐसे सामाजिक और आर्थिक संबंधों में उलझाती हैं जिनसे निकलना कठिन होता जाता है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962)

ऋण-व्यवस्था किसान के शोषण का प्रमुख माध्यम है। कर्ज तत्काल आवश्यकता पूरी करता है, पर ब्याज और भुगतान की बाध्यताएँ भविष्य के श्रम पर दावा स्थापित कर देती हैं। किसान वर्तमान संकट से निकलने के लिए उधार लेता है, किंतु उसी उधार के कारण भविष्य की आय पर उसका नियंत्रण कम होता जाता है। इस चक्र में निर्धनता केवल संसाधनों की कमी नहीं रहती; वह ऐसी संरचनात्मक निर्भरता बन जाती है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी सामाजिक गतिशीलता को रोक सकती है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962)

होरी का व्यवहार कई बार समझौतापरक दिखाई देता है। वह प्रत्यक्ष संघर्ष के बजाय सामाजिक संबंधों को बनाए रखने, प्रतिष्ठा बचाने और परिवार को संकट से निकालने की कोशिश करता है। मार्क्सवादी विश्लेषण में इसे केवल कायरता या व्यक्तिगत दुर्बलता कहना पर्याप्त नहीं होगा। उसका व्यवहार उस सामाजिक परिस्थिति से निर्मित है जिसमें प्रतिरोध करने की कीमत बहुत अधिक है और जीविका के साधन

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

पहले से ही असुरक्षित हैं। उसकी चेतना परंपरा, धर्म, परिवार और आर्थिक बाध्यता के बीच आकार लेती है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962)

होरी की त्रासदी यह है कि उसका परिश्रम उसे स्थायी सुरक्षा नहीं देता। श्रम के बावजूद ऋण समाप्त नहीं होता, सामाजिक दायित्व कम नहीं होते और सम्मान की आकांक्षा आर्थिक बोझ में बदल जाती है। अंततः उसका जीवन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि शोषण की व्यवस्था व्यक्ति की मेहनत को आत्मनिर्भरता में रूपांतरित होने से रोक सकती है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962)

**7. सामंती व्यवस्था और महाजनी प्रभुत्व**

उपन्यास में सामंती संबंध भूमि, सामाजिक प्रतिष्ठा और आज्ञापालन की अपेक्षाओं के माध्यम से व्यक्त होते हैं। जमींदारी या स्थानीय प्रभुत्व केवल आर्थिक वसूली तक सीमित नहीं है; वह ग्रामीण समाज में यह भी निर्धारित करता है कि किसकी बात सुनी जाएगी, किसे दंडित किया जा सकता है और कौन सामाजिक मान्यता प्राप्त करेगा। ऐसे संबंधों में किसान की निर्भरता बहुस्तरीय होती है—उसे उत्पादन भी करना है, देनदारियाँ भी चुकानी हैं और प्रभुत्वशाली वर्ग के साथ व्यवहार में अपनी सामाजिक स्थिति भी बचानी है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962; मार्क्स, 1867)

महाजन और ऋणदाता इस व्यवस्था को आर्थिक स्तर पर मजबूत करते हैं। ऋण के माध्यम से वे किसान की भविष्य की आय पर प्रभाव स्थापित करते हैं। ब्याज, बकाया और भुगतान की शर्तें किसान को बार-बार श्रम करने के लिए बाध्य करती हैं, जबकि जोखिम का बड़ा हिस्सा उसी पर रहता है। यदि फसल, पशुधन या पारिवारिक परिस्थिति में संकट आता है, तो उसका प्रभाव किसान पर अधिक पड़ता है; ऋणदाता का दावा फिर भी बना रहता है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962; मार्क्स, 1867)

इस प्रकार सामंती प्रभुत्व और महाजनी पूँजी का संबंध विरोधाभासी होते हुए भी परस्पर पूरक है। सामाजिक प्रतिष्ठा और परंपरागत अधिकार आर्थिक वसूली को वैधता प्रदान कर सकते हैं, जबकि ऋण-व्यवस्था प्रभुत्वशाली संबंधों को भौतिक आधार देती है। 'गोदान' इस संयुक्त संरचना को किसी अमूर्त सिद्धांत की तरह नहीं, किसान के दैनिक अनुभवों—कर्ज, दंड, सामाजिक भय और अपमान—के माध्यम से मूर्त बनाता है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962; मार्क्स, 1867)

**8. उभरती पूँजीवादी शक्तियाँ और नगरीय संसार**

'गोदान' का महत्त्व केवल ग्रामीण समाज के चित्रण में नहीं है। उपन्यास का नगरीय संसार आधुनिक शिक्षा, पेशे, उपभोग, प्रतिष्ठा, धन और सामाजिक गतिशीलता के नए रूपों को सामने लाता है। शहर में आर्थिक और सांस्कृतिक शक्ति के स्रोत गाँव से भिन्न दिखाई देते हैं, किंतु वहाँ भी वर्गीय अंतर और हितों के टकराव मौजूद हैं। धन, पेशेवर स्थिति और सामाजिक संपर्क नए प्रकार की शक्ति उत्पन्न करते हैं। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962; मार्क्स, 1867)

उभरती पूँजीवादी शक्तियाँ पारंपरिक सामंती संबंधों को पूरी तरह समाप्त नहीं करतीं; कई बार वे पुराने विशेषाधिकारों के साथ सह-अस्तित्व में रहती हैं। बाजार और धन के बढ़ते प्रभाव से सामाजिक संबंध

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

अधिकाधिक आर्थिक गणना से जुड़ते हैं, जबकि परंपरा और प्रतिष्ठा अब भी निर्णयों को प्रभावित करती हैं। इस मिश्रित परिस्थिति में ग्रामीण किसान पर बाजार का दबाव बढ़ता है, पर उसे समान अवसर या संसाधनों तक समान पहुँच नहीं मिलती। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962; मार्क्स, 1867)

नगरीय पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद आधुनिकता के नैतिक अंतर्विरोधों को भी उजागर करते हैं। शिक्षा और आधुनिक विचार अपने-आप सामाजिक न्याय की गारंटी नहीं बनते; वे वर्गीय हितों, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं और प्रतिष्ठा की राजनीति से प्रभावित हो सकते हैं। इस प्रकार उपन्यास यह संकेत देता है कि सामाजिक परिवर्तन केवल नए आर्थिक रूपों के आगमन से नहीं होगा, संसाधनों, अधिकारों और मानवीय संबंधों के पुनर्गठन से संभव होगा। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962; मार्क्स, 1867)

**9. वर्ग-संघर्ष, चेतना और प्रतिरोध की सीमाएँ**

मार्क्सवादी दृष्टिकोण में वर्ग-संघर्ष केवल खुले विद्रोह या संगठित आंदोलन का नाम नहीं है। यह संसाधनों, श्रम, सम्मान और जीवन की शर्तों को लेकर मौजूद अंतर्विरोधों में भी प्रकट होता है। 'गोदान' में किसानों की कठिनाइयाँ तथा प्रभुत्वशाली वर्गों के हितों के बीच स्पष्ट तनाव है, किंतु यह तनाव हमेशा संगठित वर्गीय प्रतिरोध का रूप नहीं लेता। पात्रों की चेतना परिवार, जाति, धर्म, प्रतिष्ठा और जीविका की चिंता से प्रभावित रहती है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962)

होरी जैसे पात्र व्यवस्था की अन्यायपूर्ण प्रकृति का सामना करते हैं, पर उनके पास सामूहिक संगठन, आर्थिक विकल्प और राजनीतिक शक्ति सीमित हैं। व्यक्तिगत स्तर पर समझौता कई बार जीवन-रक्षा की रणनीति बन जाता है। इससे शोषण की व्यवस्था को चुनौती देने के बजाय उसका पुनरुत्पादन होता रहता है। यह स्थिति उपन्यास की सामाजिक दृष्टि को अधिक जटिल बनाती है: पीड़ित व्यक्ति केवल बाहरी शक्ति से नियंत्रित नहीं होता, उन मान्यताओं से भी बँधा रहता है जिन्हें समाज सामान्य और नैतिक मानता है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962)

फिर भी उपन्यास में मानवीय संवेदना, अन्याय के प्रति बेचैनी और सामाजिक संबंधों की आलोचनात्मक प्रस्तुति परिवर्तन की संभावनाओं को जीवित रखती है। प्रेमचंद का यथार्थवाद पाठक को शोषण के तंत्र से परिचित कराता है और यह प्रश्न उठाता है कि जिस सामाजिक व्यवस्था में श्रम करने वाला व्यक्ति ही सबसे अधिक असुरक्षित है, उसकी नैतिक वैधता कितनी है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962)

**10. धर्म, परंपरा और विचारधारा**

'गोदान' में धर्म और परंपरा केवल निजी आस्था के क्षेत्र नहीं हैं; वे सामाजिक प्रतिष्ठा और सामुदायिक स्वीकृति से भी जुड़े हैं। गोदान की आकांक्षा, जातिगत मर्यादाएँ और धार्मिक दायित्व पात्रों के निर्णयों को प्रभावित करते हैं। मार्क्सवादी आलोचना में विचारधारा का अर्थ केवल जानबूझकर फैलाया गया भ्रम नहीं, उन मान्यताओं और व्यवहारों से भी है जिनके माध्यम से सामाजिक व्यवस्था स्वाभाविक और अपरिहार्य प्रतीत होने लगती है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962)

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

होरी के लिए सामाजिक मान्यता का महत्त्व वास्तविक है। वह केवल आर्थिक लाभ नहीं चाहता, ऐसा जीवन चाहता है जिसे समुदाय सम्मानजनक माने। यही आकांक्षा उसे कई बार ऐसे दायित्व स्वीकार करने की ओर ले जाती है जो उसकी आर्थिक क्षमता से बाहर हैं। इस प्रसंग में परंपरा की भूमिका दोहरी है: वह सामुदायिक पहचान और भावनात्मक सहारा देती है, परंतु जब उसका पालन आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति पर असमान बोझ डालता है, तो वह शोषणकारी संबंधों को भी मजबूत कर सकती है।

उपन्यास का आलोचनात्मक बल इस बात में है कि वह आस्था को सरलता से खारिज नहीं करता, उन सामाजिक परिस्थितियों को सामने लाता है जिनमें धार्मिक-सांस्कृतिक आकांक्षाएँ आर्थिक दबावों के साथ उलझ जाती हैं। इससे किसान की त्रासदी अधिक मानवीय और ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट बनती है।

**11. स्त्री-श्रम और पारिवारिक अर्थव्यवस्था**

कृषक परिवार की अर्थव्यवस्था में स्त्रियों का श्रम अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। घरेलू काम, पशुओं की देखभाल, भोजन की व्यवस्था, पारिवारिक संबंधों का निर्वाह और संकट की परिस्थितियों में श्रम का विस्तार—ये सभी गतिविधियाँ परिवार को टिकाए रखती हैं। फिर भी इस श्रम को अक्सर स्वतंत्र आर्थिक योगदान के रूप में मान्यता नहीं मिलती। 'गोदान' में धनिया का व्यक्तित्व इस असमानता को चुनौती देने वाली व्यावहारिक समझ और नैतिक दृढ़ता का परिचायक है।

धनिया कई प्रसंगों में होरी की तुलना में अधिक स्पष्टता से अन्याय और सामाजिक पाखंड को पहचानती है। उसका दृष्टिकोण ग्रामीण जीवन के भीतर स्त्री-अनुभव और वर्गीय असुरक्षा के संयुक्त प्रभाव को सामने लाता है। हालांकि उसे भी पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना और आर्थिक अभावों से मुक्ति नहीं मिलती, फिर भी उसका प्रतिरोध यह दिखाता है कि शोषित समुदायों के भीतर चेतना एकसमान नहीं होती।

इसलिए 'गोदान' का मार्क्सवादी अध्ययन तब अधिक व्यापक बनता है जब वर्ग-संबंधों के साथ लैंगिक श्रम-विभाजन को भी शामिल किया जाए। परिवार स्वयं एक आर्थिक इकाई है, और उसके भीतर श्रम, निर्णय तथा सामाजिक जिम्मेदारियों का वितरण भी शक्ति-संबंधों से प्रभावित होता है।

**12. चर्चा: सामंतवाद और पूँजीवाद का अंतर्संबंध**

'गोदान' को केवल सामंती समाज का चित्रण कहना उसके आर्थिक-सामाजिक विस्तार को सीमित कर देगा; इसी प्रकार इसे पूँजीवादी आधुनिकता की सीधी आलोचना मानना भी पर्याप्त नहीं होगा। उपन्यास में पुराने भूमि-संबंध, महाजनी ऋण, जातिगत पदानुक्रम और धार्मिक प्रतिष्ठा के साथ धन, पेशे, बाजार और आधुनिक सामाजिक आकांक्षाएँ सक्रिय हैं। ये शक्तियाँ एक-दूसरे को विस्थापित करने के बजाय कई स्थितियों में एक-दूसरे को सहारा देती हैं।

किसान का श्रम ग्रामीण उत्पादन का आधार है, पर उसके पास जोखिम से सुरक्षा के साधन कम हैं। ऋणदाता और प्रभुत्वशाली वर्ग संसाधनों तथा सामाजिक अधिकारों के कारण अपेक्षाकृत मजबूत स्थिति में हैं। नगर में धन और पेशेवर प्रतिष्ठा नई वर्गीय पहचान बनाते हैं, लेकिन आर्थिक और सामाजिक असमानता

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

वहाँ भी समाप्त नहीं होती। इस प्रकार उपन्यास भारतीय समाज के संक्रमणकालीन स्वरूप को उजागर करता है, जहाँ उत्पादन-संबंध बदल रहे हैं, पर पुराने विशेषाधिकार नए रूपों में बने रह सकते हैं।
मार्क्सवादी पठन की उपयोगिता इसी में है कि वह पात्रों की व्यक्तिगत नैतिकता से आगे जाकर उन संरचनाओं को पहचानता है जो उनके विकल्प सीमित करती हैं। साथ ही पाठ को केवल आर्थिक नियतिवाद में बदल देना भी उचित नहीं होगा। प्रेमचंद पात्रों की संवेदना, नैतिक दुविधा और मानवीय संबंधों को महत्त्व देते हैं; यही तत्व उपन्यास को सामाजिक दस्तावेज होने के साथ साहित्यिक रचना भी बनाते हैं। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962; मार्क्स, 1867)

## 13. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि 'गोदान' में कृषक-शोषण किसी एक व्यक्ति की दुर्भावना से उत्पन्न समस्या नहीं, भूमि, ऋण, श्रम, सामाजिक प्रतिष्ठा और विचारधारा से निर्मित व्यापक व्यवस्था का परिणाम है। होरी का जीवन इस विरोधाभास को मूर्त करता है कि उत्पादन करने वाला किसान अपने श्रम के बावजूद आर्थिक सुरक्षा और सामाजिक स्वतंत्रता हासिल नहीं कर पाता। उसकी आकांक्षाएँ व्यक्तिगत हैं, पर उसकी त्रासदी संरचनात्मक है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962; मार्क्स, 1867)
उपन्यास में सामंती प्रभुत्व और महाजनी व्यवस्था ग्रामीण जीवन पर प्रत्यक्ष दबाव डालते हैं, जबकि उभरती पूँजीवादी शक्तियाँ धन, बाजार और आधुनिक प्रतिष्ठा के नए रूपों को सामने लाती हैं। इन दोनों व्यवस्थाओं के बीच कोई साफ-सुथरा विभाजन नहीं है; वे अनेक स्तरों पर परस्पर संबद्ध हैं। जाति, धर्म और लैंगिक श्रम-विभाजन इन आर्थिक संबंधों को वैधता देने या उनके प्रभाव को गहरा करने में भूमिका निभाते हैं। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962; मार्क्स, 1867)
मार्क्सवादी दृष्टि से 'गोदान' की केंद्रीय उपलब्धि यह है कि वह निर्धनता को व्यक्तिगत असफलता के रूप में प्रस्तुत नहीं करता, उन सामाजिक संबंधों को उजागर करता है जिनमें श्रम और उसके प्रतिफल के बीच दूरी बनी रहती है। उपन्यास संगठित वर्गीय क्रांति का घोषणापत्र नहीं है; इसकी शक्ति शोषण की रोजमर्रा की प्रक्रियाओं, समझौते की विवशताओं और मानवीय गरिमा की आकांक्षा को संवेदनात्मक रूप में प्रस्तुत करने में निहित है। इसी कारण 'गोदान' आज भी ग्रामीण असमानता, ऋणग्रस्तता और सामाजिक न्याय पर विमर्श के लिए प्रासंगिक बना हुआ है। (प्रेमचंद, 1936; शर्मा, 1952; राय, 1962; मार्क्स, 1867) इस अध्ययन का प्रमुख महत्त्व यह है कि यह 'गोदान' में कृषक-शोषण को व्यक्तिगत दुर्भाग्य के बजाय आर्थिक, सामाजिक और वैचारिक संबंधों की संयुक्त संरचना के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। इसका निहितार्थ यह है कि साहित्यिक विश्लेषण के माध्यम से वर्गीय असमानता, श्रम, ऋण, सामाजिक प्रतिष्ठा और लैंगिक भूमिकाओं पर गहन विचार किया जा सकता है। साथ ही, अध्ययन यह रेखांकित करता है कि साहित्यिक व्याख्या और वर्तमान समाज के अनुभवजन्य निष्कर्षों के बीच स्पष्ट अंतर बनाए रखना आवश्यक है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

## 14.अध्ययन का महत्त्व एवं निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन का विषय प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' में वर्ग-संघर्ष और कृषक-शोषण का मार्क्सवादी विश्लेषण है। अध्ययन का केंद्र यह समझना है कि ग्रामीण जीवन में श्रम, ऋण, भूमि-संबंध, सामाजिक प्रतिष्ठा, जाति, धर्म और लैंगिक श्रम-विभाजन किस प्रकार एक-दूसरे से जुड़ते हैं। इस आधार पर अध्ययन का महत्त्व साहित्यिक, सामाजिक, सैद्धांतिक और शैक्षणिक स्तरों पर स्पष्ट किया जा सकता है।

### 1. साहित्यिक महत्त्व

यह अध्ययन 'गोदान' को केवल किसान-जीवन के यथार्थपरक चित्रण के रूप में नहीं, आर्थिक और सामाजिक शक्ति-संबंधों के आख्यान के रूप में पढ़ता है। होरी के अनुभवों के माध्यम से यह स्पष्ट किया जाता है कि व्यक्तिगत निर्धनता और असफलता के पीछे व्यापक सामाजिक संरचनाएँ भी सक्रिय हो सकती हैं।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण उपन्यास के पात्रों, घटनाओं और सामाजिक परिवेश को श्रम, संपत्ति, ऋण तथा वर्गीय असमानता की अवधारणाओं के साथ जोड़कर समझने का अवसर देता है। इससे प्रेमचंद के यथार्थवाद की सामाजिक आलोचनात्मक क्षमता पर विचार किया जा सकता है।

### 2. सामाजिक महत्त्व

अध्ययन ग्रामीण समाज में किसान की आर्थिक असुरक्षा, ऋणग्रस्तता, सामाजिक दायित्वों और सीमित निर्णय-स्वायत्तता की समस्या को सामने लाता है। यह संकेत करता है कि कृषक-शोषण को केवल किसी एक व्यक्ति के व्यवहार से समझना पर्याप्त नहीं; भूमि, ऋण, प्रतिष्ठा और सामाजिक मान्यताओं से बने संबंध भी महत्त्वपूर्ण हैं।

अध्ययन जाति और धर्म-संबंधी मान्यताओं तथा लैंगिक श्रम-विभाजन को वर्गीय संबंधों से जोड़कर देखने का आग्रह करता है। धनिया के श्रम और उसके प्रतिरोध पर ध्यान देने से ग्रामीण परिवार के भीतर महिलाओं के योगदान तथा उनकी सीमित सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर भी विचार किया जा सकता है।

### 3. सैद्धांतिक महत्त्व

यह अध्ययन मार्क्सवादी साहित्यालोचना की अवधारणाओं—वर्ग-संबंध, उत्पादन-संबंध, श्रम, संपत्ति, विचारधारा और सामाजिक पुनरुत्पादन—को 'गोदान' के पाठ के विश्लेषण में लागू करता है। इससे साहित्यिक पाठ और सामाजिक-आर्थिक संरचना के बीच संबंधों को व्यवस्थित रूप से समझने का ढाँचा मिलता है।

अध्ययन सामंती प्रभुत्व और उभरती पूँजीवादी शक्तियों को पूरी तरह अलग-अलग व्यवस्थाओं के रूप में देखने के बजाय उनके अंतर्संबंधों की जाँच करता है। यह दृष्टि उपन्यास में पुराने सामाजिक विशेषाधिकारों और नए आर्थिक दबावों के सह-अस्तित्व को समझने में उपयोगी है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

**4. शैक्षणिक एवं शोधगत महत्त्व**

यह अध्ययन हिंदी साहित्य, प्रेमचंद-अध्ययन, ग्रामीण समाज के साहित्यिक चित्रण और मार्क्सवादी आलोचना के विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों के लिए एक विश्लेषणात्मक आधार प्रस्तुत कर सकता है। इसमें मूल उपन्यास के प्रसंगों को सैद्धांतिक अवधारणाओं से जोड़कर पढ़ने की पद्धति अपनाई गई है।

यह आगे के शोध के लिए कुछ प्रश्न भी सामने रखता है—'गोदान' में ऋण और श्रम का चित्रण किस प्रकार विकसित होता है; ग्रामीण और नगरीय संसार के वर्गीय संबंधों में क्या अंतर है; तथा जाति, धर्म और लैंगिकता आर्थिक असमानता के अनुभव को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। इन प्रश्नों पर आगे का अध्ययन मूल पाठ और सत्यापित आलोचनात्मक स्रोतों के आधार पर किया जा सकता है।

**5. अध्ययन के व्यावहारिक एवं समकालीन निहितार्थ**

यद्यपि यह साहित्यिक और पाठ-केंद्रित अध्ययन है, फिर भी इसके निष्कर्ष ग्रामीण असमानता, ऋण-निर्भरता, श्रम के मूल्य और सामाजिक प्रतिष्ठा के दबाव जैसे प्रश्नों पर आलोचनात्मक विचार को प्रोत्साहित कर सकते हैं। उपन्यास के चित्रण को वर्तमान ग्रामीण समाज का प्रत्यक्ष सांख्यिकीय प्रमाण नहीं माना जाना चाहिए; समकालीन स्थिति पर निष्कर्ष निकालने के लिए अलग सामाजिक-आर्थिक आँकड़ों और क्षेत्रीय शोध की आवश्यकता होगी।

शिक्षण में इस अध्ययन का उपयोग साहित्य को उसके ऐतिहासिक संदर्भ, आर्थिक संरचना और सामाजिक संबंधों के साथ पढ़ाने के लिए किया जा सकता है। यह विद्यार्थियों को पात्रों के व्यक्तिगत निर्णयों के साथ उन संरचनात्मक सीमाओं पर भी विचार करने के लिए प्रेरित करता है जिनके भीतर वे निर्णय लेते हैं।

**6. अध्ययन की सीमाओं के संदर्भ में निहितार्थ**

यह अध्ययन गुणात्मक और पाठ-केंद्रित है; इसलिए इसके निष्कर्ष 'गोदान' के कथानक, पात्रों और सामाजिक-सांस्कृतिक चित्रण की व्याख्या तक सीमित हैं। इससे सभी किसानों या पूरे भारतीय ग्रामीण समाज के बारे में सामान्यीकृत निष्कर्ष स्वतः नहीं निकाले जा सकते।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण इस शोध का प्रमुख विश्लेषणात्मक आधार है, इसलिए परिणामों को इसी सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य में समझना चाहिए। अन्य आलोचनात्मक दृष्टियों से तुलना करने तथा संदर्भ-सूची में शामिल आलोचनात्मक ग्रंथों के मूल पाठ की जाँच करने से भविष्य में विश्लेषण और अधिक व्यापक हो सकता है।

**संदर्भ सूची**

1. प्रेमचंद। (1936)। गोदान। हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय।
2. शर्मा, रा. वि. (1952)। प्रेमचंद और उनका युग। राजकमल प्रकाशन।
3. राय, अ. (1962)। कलम का सिपाही। हंस प्रकाशन।
4. देवी, शि. (1944)। प्रेमचंद घर में। आत्माराम एंड संस।
5. कुमार, जै. (1973)। प्रेमचंद का गोदान यदि मैं लिखता। In प. श्रीवास्तव (Ed.), गोदान: एक पुनर्विचार (pp. 45–58)। साहित्य प्रकाशन।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

6. राय, गो. (1985)। गोदान: नया परिप्रेक्ष्य। अनुपम प्रकाशन।
7. श्रीवास्तव, प. (Ed.). (1982)। गोदान: एक पुनर्विचार। अभिव्यक्ति प्रकाशन।
8. वाजपेयी, न. (1953)। प्रेमचंद: एक साहित्यिक विवेचन। साहित्य भवन।
9. मुखर्जी, मी. (1980)। गोदान: कल्पना और यथार्थ। भारतीय साहित्य प्रकाशन।
10. मिश्रा, शि. (2005)। गोदान, हमारा समय और हम। लोकभारती प्रकाशन।
11. मार्क्स, का. (1867)। पूँजी: राजनीतिक अर्थशास्त्र की आलोचना (खंड 1)। ओटो मीस्नर प्रकाशन।
12. मार्क्स, का., एवं एंगेल्स, फ्रे. (1846)। जर्मन विचारधारा। फ्रांज डुनकर प्रकाशन।
13. एंगेल्स, फ्रे. (1884)। परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति। डाइट्ज़ प्रकाशन।
14. विलियम्स, रे. (1977)। मार्क्सवाद और साहित्य। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रकाशन।
15. ईगलटन, टे. (1976)। मार्क्सवादी साहित्यिक आलोचना। मेथ्यूएन प्रकाशन।
16. शुक्ल, रा. (1929)। हिंदी साहित्य का इतिहास। नागरी प्रचारिणी सभा।
17. सिंह, ना. (1962)। इतिहास और आलोचना। राजकमल प्रकाशन।
18. सत्यकाम। (2018)। हिंदी आलोचना में गोदान का मूल्यांकन। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय।
19. कौशिक, का. (2022)। गोदान: सामाजिक समस्याओं का दर्पण। अंतर्राष्ट्रीय हिंदी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, 5(2), 35–42।
20. पटेल, नि. (2025)। आलोचक की दृष्टि से गोदान का मूल्यांकन। शोध उत्कर्ष, 3(12), 47–48।